Volume: 1 Issue: 1 Pages: 01-04

International Journal of Research in Academic World

E-ISSN: 2583-1615

Received: 24/August/2021 Int. J Res. Acad. World. 2021; 1(1):01-04 Accepted: 01/September/2021

प्राचीन भारतीय शिक्षा में बौद्ध कालीन शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

***[1]Kiran Kaur**

*[1]Research Scholar, Shri Ramadevi Kanya Mahavidhyalaya, Rajasthan, India.

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में बौद्ध कालीन शिक्षा का विश्लेषण करना है जिसके अंतर्गत शैक्षिक गतिविधियों में उत्पन्न आमूलचूल परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया इसके अतिरिक्त प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करने के साथ ही बौद्ध कालीन शिक्षा के अंतर्गत बौद्ध कालीन शिक्षा का पाठ्यक्रम, शिक्षा के उद्देश्यों तथा शिक्षक शिक्षार्थियों के मध्य संबंधों की व्याख्या करना भी है अध्ययन। यह अध्ययन शिक्षाविदो तथा समाज शास्त्रियों हेतु अत्यंत कारगर सिद्ध होगा तथा नए शोधार्थियों हेतु इस विषय की समझ को भी विकसित करता है।

मूल शब्द: वैदिक शिक्षा, बौद्ध काल, गौतम बुध, सामनेर, बोध मठ, बिहार

प्रस्तावना

शिक्षा प्रत्येक मानव के सर्वांगीण विकास मानव के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यंत ही आवश्यक है। शिक्षा के अभाव में मानव का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। मानव सभ्यता के विकास की तरह ही भारतीय संस्कृति मैं शिक्षा व्यवस्था क इतिहास भी अत्यंत ही प्राचीन रहा हैं इसके अतिरिक्त प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था को विश्व की सर्वाधिक रोचक तथा महत्वपूर्ण शिक्षा व्यवस्था होने का गौरव भी प्राप्त है। [1] प्राचीन भारत में शिक्षा का महत्व बहुत अधिक था जिसका उल्लेख विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में भी देखने को मिलता है। सुभाषित रत्न संदोह में ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र बतलाया गया है। यह मनुष्य को अंतर्दृष्टि प्रदान करता है तथा प्रत्येक कार्य को करने की क्षमता प्रदान करता है। [4] महाभारत में विद्या के स्थान को किसी भी वस्तु से बहुत ऊंचा बताया गया है। [5] परंतु इसी शिक्षा व्यवस्था का एक अन्य रूप वैचारिक आंदोलनों द्वारा ईसा पूर्व छठी शताब्दी के अंतर्गत दिखाई पड़ता है जिसके परिणाम स्वरूप बौद्ध धर्म का उदय हुआ। वास्तव में भारत में बौद्ध धर्म हिंदू धर्म का ही एक व्यापक धर्म है जिसका उदय वैदिक कालीन शिक्षा पर ब्राह्मणवाद के वर्चस्व स्थापित हो जाने के परिणामस्वरूप हुआ था। बौद्ध कालीन शिक्षा के उद्देश्य भी वैदिक कालीन शिक्षा के समतुल्य ही देखने को मिलते हैं परंतु इसके अंतर्गत वैदिक कालीन शिक्षा से वंचित शुद्रों तथा महिलाओं की स्थिति को भी बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था में स्थान दिया गया था।

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण करना है जिसके अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को सम्मिलित किया गया है।

1. प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।
2. बौद्ध कालीन शिक्षा की प्रकृति व स्वरूप का विश्लेषण करना।

1. प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था और इसकी पृष्ठभूमि

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था को वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था के रूप में जाना गया है। अतः वैदिक कालीन शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मानव को सत्य का ज्ञान करवाना तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु शिक्षित करना था। वैदिक कालीन शिक्षा को आधुनिक शिक्षा की नींव का पत्थर कहा जाता है। क्योंकि यह शिक्षा हमारी संस्कृति पर आधारित थी। भारतीय शिक्षा व्यवस्था की प्राचीनता तथा प्रसिद्धि के संबंध में एफ. डब्ल्यू

***Corresponding Author:** Kiran Kaur

थॉमस कहते हैं कि, "There has been no country except India where the love of learning had so early an origin or has excersied so lasting and powerful influence" "विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जहां ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय से प्रारंभ हुआ हो जितना भारत मे अथवा जिसने इतना स्थाई ओर शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया है जितना भारत ने"। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्रंथों के रूप में वेदों की रचना हुई। जिसके अंतर्गत सबसे प्राचीन वेद के रूप में ऋग्वेद अस्तित्व में आया जिसका निर्माण लगभग 1200 ईसा पूर्व माना गया है। इसके अतिरिक्त वैदिक कालीन शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में ज्ञान का विकास करना, नैतिक चरित्र का निर्माण करना, जीविका उपार्जन तथा कला कौशल से संबंधित ज्ञान को संवर्धित करना, आध्यात्मिक विकास करना तथा संस्कृति की सुरक्षा तथा संरक्षण हेतु शिक्षा प्रदान करना था। इस काल में शिक्षण कार्य मुख्य रूप से मौखिक विधि द्वारा संपन किया जाता था। साथ ही भाषा के ज्ञान के उद्देश्य से अनुकरण विधि कला एवं कौशल के विकास हेतु अभ्यास तथा प्रदर्शन में विधि का प्रयोग किया जाता था। सामान्य तौर पर इस काल की शिक्षा में शिक्षार्थियों की शंका समाधान हेतु वाद विवाद तथा प्रश्नोत्तरी विधि का प्रयोग भी देखने को मिलता है। वैदिक काल में अति विद्वान स्वाध्यायी तथा धर्म परायण व्यक्ति ही शिक्षक का पद ग्रहण कर सकता था। वैदिक काल में शिक्षकों को देवों के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता था। समाज में उनका स्थान सर्वोच्च पर होता था। हालांकि वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान नहीं दिया गया अथवा वर्णों के आधार पर स्त्री शिक्षा का प्रचलन था। शुद्रो की भी यही स्थिति इस काल में देखने को मिलती हैं।

शूद्रों को छोड़कर शेष तीनों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) इस काल में शिक्षा अध्ययन कर सकते थे। वे किसी भी आचार्य के शिष्य हो सकते थे। चित्र बनाने के लिए प्रारंभिक संस्कार उपनयन संस्कार कहलाता था इसके पश्चात बालक का दूसरा जन्म माना जाता था ऐसी मान्यता थी कि जन्म से पहले प्रत्येक पालक बालक शूद्र होता था। उपनयन संस्कार के पश्चात ही वह द्विज कोटि में प्रवेश करता था। [2]

उपनयन संस्कार के पश्चात बालक को शिक्षा प्राप्ति हेतु आश्रमों अथवा गुरुकुल में भेजा जाता था इसके अतिरिक्त आश्रमों की आवश्यकता इसलिए भी होती थी ताकि बालक संयमित होकर तपो की वृद्धि कर सके।

विद्यार्थी का गुरु के प्रति कर्तव्य तथा गुरु का स्थान बालक के माता पिता, अग्नि, वायु एवं जल में से सबसे ऊंचा था। मनुष्य के ब्राह्मण चारी को गुरु उपस्थिति में कम भोजन करना चाहिए सादे वस्त्र पहनना चाहिए जल्दी उठना चाहिए तथा देर से सोना चाहिए। [3]

2. बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण

बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था के उदय को पुरोहित वाद के उदय का परिणाम समझा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

पश्चिमी देशों तथा यूरोपीय देशों से आए आर्यों ने प्राचीन भारतीय वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया। भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर ब्राह्मणों का एकछत्र राज्य स्थापित हो चुका था महिलाओं तथा शूद्रों को शिक्षा से वंचित कर दिया गया था जिसके परिणाम स्वरुप वे सरकारी तथा व्यवसायिक कार्यो से वंचित हो गए थे। कई समाज शास्त्रियों तथा इतिहासकारों का एकमत है कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली में उत्तर वैदिक काल आते आते धार्मिक आडंबरो का प्रभाव अत्यधिक वृद्ध होता जा रहा था अर्थात शिक्षा पर धर्म का बोलबाला हो चुका था। इसी क्रम में छठी शताब्दी ईसा पूर्व अथवा आज से 2500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म को प्रवर्तित किया गया था। बौद्ध धर्म का उदय भारतीय जीवन का आंगीक परिणाम था ना कि बाह्य वृत्ति का परिणाम था।

बौद्ध काल में शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य ना केवल छात्रों का बौद्धिक विकास करना था अपितु उनके शारीरिक विकास, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास का भी सर्वोत्तम माध्यम उपलब्ध करवाना था।

बौद्ध कालीन दर्शनों में चार आर्य सत्य बतलाए गए है।

1. जीवन दुखों से भरा है।
2. दुखों के कारण है।
3. दुखों का अंत संभव है।
4. दुखों के अंत का उपाय है।

बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य के दुखों का कारण अज्ञानता ही है जिसे शिक्षा रूपी हथियार द्वारा ही पराजित किया जा सकता है।

बौद्ध कालीन शिक्षा के लक्ष्य व्यक्ति परक होने के अतिरिक्त सामाजिक भी थे। इस काल की शिक्षा के तहत मनुष्य के नैतिक विकास के साथ-साथ सामाजिक लक्ष्यों में संस्कृति को प्रोत्साहन प्रदान करना तथा सामाजिक दक्षता भी उत्पन्न करना केंद्र माने गए है।

बौद्ध कालीन शैक्षिक संस्थान (मठ/विहार)

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की शिक्षण संस्थाओं के तुल्य ही बौद्ध कालीन ऐसी शिक्षण संस्थाओं को बौद्ध मठ, बौद्ध विहार अथवा बौद्ध सांघाराम के नामों से अस्तित्व में लाया गया। जिस प्रकार वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में छात्रों के गुरुकुल में प्रवेश से पूर्व उपनयन संस्कार अनिवार्य था ठीक इसी प्रकार बौद्ध कालीन शिक्षा में "सामनेर" अथवा छात्रों के मठ अथवा विहार में प्रवेश से पूर्व प्रवज्जा संस्कार अनिवार्य था जबकि इसके विपरित शीक्षा प्राप्ति के समापन के पश्चात उपसंपदा संस्कार किया जाता था।

सामनेर: बौद्ध काल में मठों में प्रवेश से पूर्व छात्रों को प्रवज्य संस्कार की विधि से गुजरना पड़ता था अतेव उक्त संस्कार के पश्चात ही बालक अथवा छात्र को सामनेर कहा जाता था।

प्रवज्जया संस्कार: इसका शाब्दिक अर्थ होता है शिक्षा प्राप्ति हेतु घर को छोड़कर बाहर जाना। इसे बालक की आयु के 8 वे वर्ष में संपादित किया जाता था। सामान्यतः यह संस्कार बौद्ध मठों के प्रमुख भिक्षुओं द्वारा ही संपादित किया जाता था इसके अंतर्गत बालकों का मुंडन करवाकर तथा पीले वस्त्रों को धारण करवाया जाता था साथ ही मठो के प्रमुख भिक्षुओं के चरणों में माथा टेक कर शरणम त्रयी अर्थात

बुद्धं शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
संघं शरणं गच्छामि का उच्चारण करवाया जाता था।

इसके पश्चात बौद्ध भिक्षुओं द्वारा छात्रो को 10 उपदेश दिए जाते थे जिन्हे दस सिक्खा पदानी कहा जाता था।

i) अहिंसा का पालन करना।
ii) शुद्ध आचरण करना।
iii) असत्य ना बोलना।
iv) सात्विक भोजन ग्रहण करना।
v) मादक वस्तुओं का प्रयोग ना करना।
vi) दूसरों की निंदा ना करना।
vii) श्रृंगार आदि कि वस्तुओं का प्रयोग ना करना।
viii) नृत्य तथा संगीत से दूर रहना।
ix) पराई वस्तु ना लेना।
x) सोना चांदी जैसे किमती दान ग्रहण ना करना।

उपसंपदा संस्कार: यह संस्कार शिक्षा प्राप्ति की अंतिम चरण को प्रदर्शित करता है अर्थात् इसका आयोजन उच्च शिक्षा पूर्ण कर लेने वाले बालक किया जाता था। यह संस्कार जीवन के 20 वर्ष में आयोजित किया जाता था।

मठ अथवा विहार: बौद्ध काल में शिक्षा प्राप्ति तथा बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार हेतु स्थापित किए गए शिक्षण संस्थानों को बौद्ध मठ अथवा विहारो के नाम से जाना जाता है। बौद्ध कालीन शिक्षण केंद्रो के रुप में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, मिथिला तथा वल्लभी विश्व भर में अपने बौद्ध कालीन शिक्षा हेतु विश्वविख्यात रहे हैं।

बौद्ध कालीन पाठ्यक्रम

बौद्ध कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देय निर्वाण प्राप्ति था अतएव बौद्ध कालीन शिक्षा में बौद्ध धर्म का अत्यधिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं। बौद्ध कालीन शिक्षा पाठ्यक्रम को दो भागों में विभाजित किया गया था।

प्रारंभिक शिक्षा: प्रारंभिक शिक्षा में लिखना, पढ़ना तथा साधारण गणित विषय का ज्ञान करवाया जाता था।

उच्च शिक्षा: इसके अंतर्गत उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी जिसके प्रमुख विषयों में बौद्ध कालीन पाठ्यक्रम में शब्द विद्या से संबंधित व्याकरण, उनकी व्युत्पत्ति तथा शब्दों के निर्माण संबंधीत जानकारी का पठन-पाठन किया जाता था। चिकित्सा विद्या तथा शिलपासन्न विद्या के अंतर्गत क्रमशः औषधि विज्ञान, शारीरिक विज्ञान तथा उद्योगों से संबंधित कालाओं का समावेश किया गया था। बौद्ध काल में अध्ययन काल 20 वर्षों तक निर्धारीत किया गया था जिसका समापन उप सम्पदा संस्कार के रुप में देखने को मिलता है।

छात्र शिक्षक संबंध

बौद्ध कालीन शिक्षा में शिक्षकों का स्थान सम्मानजनक था। बौद्ध मठो तथा वीहारो में शिक्षण कार्य बौद्ध भिक्षुओं द्वारा संपादित करवाया जाता था। बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के मध्य मधुर तथा स्नेह पूर्ण संबंध होते थे। बौद्ध कालीन शिक्षा में सभी धर्म तथा जातियों के बालकों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था परन्तु बौद्ध धर्म से संबंध रखने वाले बालकों को प्राथमिकता दी जाती थी। शिक्षक अपने कला कौशल, उत्तम चरित्र तथा अनुशासन के द्वारा बालकों में व्यवहारिक ज्ञान को भी विकसित करते थे।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का व्याख्यात्मक विश्लेषण करने के पश्चात यह समझा जा सकता है की प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में धार्मिक आडंबरों तथा पुरोहित वाद के अत्यधिक दखल के परिणामस्वरूप भारतीय सामाजिक परिवेश में एक संकट उत्पन्न हो गया था अतः इन्हीं सामाजिक विषमताओं की पूर्ति अथवा शिक्षा के सटीक उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में बौद्ध धर्म का उदय हुआ जिसके अंतर्गत शैक्षिक संस्थानों के रुप में नालंदा, विक्रमशिला तथा तक्षशिला जैसे विश्व विख्यात विश्वविद्यालयों की स्थापना भारत में हुई और विश्व भर के विद्वानों के लिए यह शिक्षण संस्थाएं सर्वोच्च समझी गयी। उपर्युक्त विवेचन के पश्चात यह कहा जा सकता है की जिस तरह वैदिक युग कि शिक्षा प्रणाली कि कुछेक विशेषताएं वर्तमान में भी प्रासंगिक है ठिक उसी प्रकार बौद्ध कालीन शिक्षा की भी अनेकों विशेषताएं आज भी विद्यमान है।

संदर्भ सूची

1. डॉ व्रंदा सेन गुप्ता, बौद्ध कालीन शिक्षा पद्धति, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेज इन सोशल साइंस, Anv publications, 2016, 4(1)
2. जन्मना जयते शूद्रः संसकाराददविज उच्यते, शतपथ ब्राह्मण 11|5
3. मनु. 2|194-18
4. ज्ञानम तृतीयम मनुजस्य नेत्रम सुभाषितरत्नमसंदेह प्र. 194
5. नास्ती विद्यस्मम् चक्षुनासती सत्यसम्म तपः। महाभारत, 12।339।6